Pro

Chapter 7

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1	בְּנִי	שְׁמֹר	אֲמָרַי	וּמִצְוֹתַי	תִּצְפֹּן	אִתָּךְ׃
	मेरे-पुत्र	रक्षा-कर	वचन-मेरे	और-आज्ञाएँ-मेरी	संचित-कर	अपने-पास
		H8104	H0561	H4687	H6845	H0854

हे मेरे पुत्र, मेरे वचनों को पाल और अपने मन में मेरे आदेश संचित कर।

2	שְׁמֹר	מִצְוֹתַי	וֶחְיֵה	וְתוֹרָתִי	כְּאִישׁוֹן	עֵינֶיךָ׃
	रक्षा-कर	आज्ञाएँ-मेरी	और-जी	और-व्यवस्था-मेरी	पुतली-की-तरह	आँख-अपनी-की
	H8104	H4687	H2421	H8451	H0380	

मेरे आदेशों का पालन करता रहा तो तू जीवन पायेगा। तू मेरे उपदेशों को अपनी आँखों की पुतली सरीखा सम्भाल कर रख।

3	קָשְׁרֵם	עַל־	אֶצְבְּעֹתֶיךָ	כָּתְבֵם	עַל־	לוּחַ	לִבֶּךָ׃
	बाँध-उन्हें	-पर	उंगलियों-अपनी	लिख	-पर	पट्टी	हृदय-अपने-की
	H7194		H0676	H3789		H3871	

उनको अपनी उंगलियों पर बाँध ले, तू अपने हृदय पटल पर उनको लिख ले।

4	אֱמֹר	לְחָכְמָה	אֲחֹתִי	אָתְּ	וּמוֹדָע	לַבִינָה	תִּקְרָא׃
	कह	बुद्धि-को	बहन-मेरी	तू	और-परिचित	समझ-को	पुकार
	H0559	H2451	H0269		H4129	H0998	H7121

बुद्ध से कह, “तू मेरी बहन है” और तू समझ बूझ को अपनी कुटुम्बी जन कह।

5	לִשְׁמָרְךָ	מֵאִשָּׁה	זָרָה	מִנָּכְרִיָּה	אֲמָרֶיהָ	הֶחֱלִיקָה׃
	बचाने-के-लिए-तुझे	स्त्री-से	पराई	विदेशी-से	वचन-जिसके	चिकने-हैं
	H8104	H0802		H5237	H0561	

वे ही तुझको उस कुलटा से और स्वेच्छाचारिणी पत्नी के लुभावनें वचनों से बचायेंगे।

6	כִּי	בְחַלּוֹן	בֵּיתִי	בְעַד	אֶשְׁנַבִּי	נִשְׁקָפְתִּי׃
	क्योंकि	खिड़की-से	घर-अपने-के	से	झरोखे-अपने	देखा-मैंने
		H2474		H1157	H0822	H8259

एक दिन मैंने अपने घर की खिड़की के झरोखे से झाँका,

7	וָאֶרְאֶה	בַפְּתָאִים	אָבִינָה	בַבָּנִים	נַעַר	חֲסַר־	לֵב׃
	और-देखा-मैंने	भोलों-में	समझा-मैंने	जवानों-में	जवान	अभाव-	हृदय-का
	H7200		H0995		H5288	H2638	

सरल युवकों के बीच एक ऐसा नवयुवक देखा जिसको भले—बुरे की पहचान नहीं थी।

8	עֹבֵר	בַשּׁוּק	אֵצֶל	פִּנָּה	וְדֶרֶךְ	בֵּיתָהּ	יִצְעָד׃
	गुजरनेवाला	बाजार-में	पास	कोने-उसके	और-राह	घर-उसके-की	चलता-है
		H7784	H0681	H6438	H1870		H6805

वह उसी गली से होकर, उसी कुलटा के नुक्कड़ के पास से जा रहा था। वह उसके ही घर की तरफ बढ़ता जा रहा था।

9	בְּנֶשֶׁף־	בְּעֶרֶב	יוֹם	בְּאִישׁוֹן	לַיְלָה	וַאֲפֵלָה׃
	गोधूलि-में-	शाम-में	दिन-के	अंधेरे-में	रात-के	और-अंधकार
	H5399	H6153	H3117	H0380	H3915	H0653

सूरज शाम के धुंधलके में डूबता था, रात के अन्धेरे की तहें जमती जाती थी।

10

וְהִנֵּה	אִשָּׁה	לִקְרָאתוֹ	שִׁית	זוֹנָה	וּנְצֻרַת	לֵב׃
और-देखो	स्त्री	मिलने-उसे	वेश	वेश्या-का	और-छिपी-हुई	हृदय-की
H2009	H0802	H7125	H7897	H2181	H5341	

तभी कोई कामिनी उससे मिलने के लिये निकल कर बाहर आई। वह वेश्या के वेश में सजी हुई थी। उसकी इच्छाओं में कपट छुपा था।

11

הֹמִיָּה	הִיא	וְסֹרָרֶת	בְּבֵיתָהּ	לֹא־	יִשְׁכְּנוּ	רַגְלֶיהָ׃
शोरगुलवाली	वह	और-विद्रोही	घर-उसके-में	नहीं-	टिकते	पाँव-उसके
H1993	H1931	H5637		H3808	H7931	H7272

वह वाचाल और निरंकुश थी। उसके पैर कभी घर में नहीं टिकते थे।

12

פַּעַם	בַּחוּץ	פַּעַם	בָּרְחֹבוֹת	וְאֵצֶל	כָּל־	פִּנָּה	תֶאֱרֹב׃
कभी	बाहर	कभी	चौकों-में	और-पास	सब-	कोने-के	घात-लगाती-है
H6471	H2351	H6471	H7339	H0681	H3605	H6438	H0693

वह कभी — कभी गलियों में, कभी चौराहों पर, और हर किसी नुक्कड़ पर घात लगाती थी।

13

וְהֶחֱזִיקָה	בּוֹ	וְנָשְׁקָה־	לּוֹ	הֵעֵזָה	פָנֶיהָ	וַתֹּאמַר	לוֹ׃
और-पकड़ा	उसे	और-चूमा-	उसे	निर्लज्ज-किया	चेहरा-अपना	और-कहा	उससे
H2388				H5810	H6440	H0559	

उसने उसे रोक लिया और उसे पकड़ा। उसने उसे निर्लज्ज मुख से चूम लिया, फिर उससे बोली,

14

זִבְחֵי	שְׁלָמִים	עָלָי	הַיּוֹם	שִׁלַּמְתִּי	נְדָרָי׃
बलिदान	शांति-बलि-के	मुझ-पर	आज	चुकाया-मैंने	मन्नतें-अपनी
H2077	H8002		H3117		H5088

“आज मुझे मौत्री भेंट अर्पित करनी थी। मैंने अपनी मन्नत पूरी कर ली है। मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, दे दिया है। उसका कुछ भाग मैं घर ले जा रही हूँ। अब मेरे पास बहुतेरे खाने के लिये है!

15

עַל־	כֵּן	יָצָאתִי	לִקְרָאתֶךָ	לְשַׁחֵר	פָּנֶיךָ	וָאֶמְצָאֶךָּ׃
-पर	इसलिए	निकली-मैं	मिलने-तुझे	ढूँढ़ने	चेहरा-तेरा	और-पाया-तुझे
		H3318	H7125	H7836	H6440	H4672

इसलिये मैं तुझसे मिलने बाहर आई। मैं तुझे खोजती रही और तुझको पा लिया।

16

מַרְבַדִּים	רָבַדְתִּי	עַרְשִׂי	חֲטֻבוֹת	אֵטוּן	מִצְרָיִם׃
बिछौने	बिछाए-मैंने	बिस्तरा-अपना	नक्काशीदार	सूत-से	मिस्र-के
H4765	H7234	H6210	H2405	H0330	H4714

मैंने मिस्र के मलमल की रंगों भरी चादर से सेज सजाई है।

17

נַפְתִּי	מִשְׁכָּבִי	מֹר	אֲהָלִים	וְקִנָּמוֹן׃
सुगंधित-किया-मैंने	बिस्तरा-अपना	गन्धरस	अगरू	और-दालचीनी
	H4904	H4753	H0174	H7076

मैंने अपनी सेज को गंधरस, दालचीनी और अगर गंध से सुगन्धित किया है।

18

לְכָה	נִרְוֶה	דֹדִים	עַד־	הַבֹּקֶר	נִתְעַלְּסָה	בָּאֳהָבִים׃
चल	तृप्त-हों	प्रेम-से	जब-तक-	सुबह	आनन्दित-हों	प्रेमों-में
H3212	H7301	H1730	H5704	H1242	H5965	H0159

तू मेरे पास आ जा। भोर की किरण चूर हुए, प्रेम की दाखमधु पीते रहें। आ, हम परस्पर प्रेम से भोग करें।

19

כִּי	אֵין	הָאִישׁ	בְּבֵיתוֹ	הָלַךְ	בְּדֶרֶךְ	מֵרָחוֹק׃
क्योंकि	नहीं	पुरुष	घर-अपने-में	गया-है	राह-पर	दूर
	H0369	H0376		H1980	H1870	H7350

मेरे पति घर पर नहीं है। वह दूर यात्रा पर गया है।

20							
צְרוֹר־	הַכֶּסֶף	לָקַח	בְּיָדוֹ	לְיוֹם	הַכֵּסֶא	יָבֹא	בֵיתוֹ׃
थैली-	चाँदी-की	लिया-उसने	हाथ-अपने-में	दिन-को	पूर्णिमा	आएगा	घर-अपने
	H3701	H3947	H3027	H3117	H3677	H0935	

वह अपनी थैली धन से भर कर ले गया है और पूर्णमासी तक घर पर नहीं होगा।”

21					
הִטַּתּוּ	בְּרֹב	לִקְחָהּ	בְּחֵלֶק	שְׂפָתֶיהָ	תַּדִּיחֶנּוּ׃
मोड़ा-उसने	बहुतायत-से	सीख-अपनी-से	चिकनाई-से	होंठों-अपनी-की	भटकाती-है-उसे
H5186	H7230	H3948		H8193	H5080

उसने उसे लुभावने शब्दों से मोह लिया। उसको मीठी मधुर वाणी से फुसला लिया।

22										
הוֹלֵךְ	אַחֲרֶיהָ	פִּתְאֹם	כְּשׁוֹר	אֶל־	טָבַח	יָבוֹא	וּכְעֶכֶס	אֶל־	מוּסַר	אֱוִיל׃
चलनेवाला	पीछे-उसके	अचानक	बैल-की-तरह	-की-ओर	वध	आता-है	और-बेड़ी-की-तरह	-की-ओर	शिक्षा	मूर्ख-की
H1980		H6597	H7794	H0413	H2874	H0935	H5914	H0413	H4148	H0191

वह तुरन्त उसके पीछे ऐसे हो लिया जैसे कोई बैल वध के लिये खिंचा चला जाये। जैसे कोई निरा मूर्ख जाल में पैर धरे।

23												
עַד	יְפַלַּח	חֵץ	כְּבֵדוֹ	כְּמַהֵר	צִפּוֹר	אֶל־	פָּח	וְלֹא־	יָדַע	כִּי־	בְנַפְשׁוֹ	הוּא׃	פ
जब-तक	फाड़े	तीर	कलेजा-उसके	जैसे-जल्दी-करती-है	चिड़िया	-की-ओर	फंदा	और-नहीं-	जानता	कि-	प्राण-अपने-में	वह	—
H5704	H6398	H2671	H3516		H6833	H0413		H3808	H3045		H5315	H1931	

जब तक एक तीर उसका हृदय नहीं बेधेगा तब तक वह उस पक्षी सा जाल पर बिना यह जाने टूट पड़ेगा कि जाल उसके प्राण हर लेगा।

24						
וְעַתָּה	בָנִים	שִׁמְעוּ־	לִי	וְהַקְשִׁיבוּ	לְאִמְרֵי־	פִי׃
और-अब	पुत्रो	सुनो-	मुझे	और-ध्यान-दो	वचनों-की-ओर-	मुख-मेरे-के
H6258		H8085		H7181	H0561	H6310

सो मेरे पुत्रों, अब मेरी बात सुनो और जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर ध्यान धरो।

25							
אַל־	יֵשְׂטְ	אֶל־	דְּרָכֶיהָ	לִבֶּךָ	אַל־	תֵּתַע	בִּנְתִיבוֹתֶיהָ׃
मत-	मुड़े	-की-ओर	राहों-उसकी	हृदय-तेरा	मत-	भटक	पथों-उसके-में
H0408	H7847	H0413	H1870		H0408	H8582	

अपना मन कुलटा की राहों में मत खिंचने दो अथवा उसे उसके मार्गो पर मत भटकने दो।

26						
כִּי־	רַבִּים	חֲלָלִים	הִפִּילָה	וַעֲצֻמִים	כָּל־	הֲרֻגֶיהָ׃
क्योंकि-	बहुतेरों	घायलों	गिराए-उसने	और-शक्तिशाली	सब-	मारे-गए-उसके
			H5307	H6099	H3605	H2026

कितने ही शिकार उसने मार गिरायें हैं। उसने जिनको मारा उनका जमघट बहुत बड़ा है।

27							
דַּרְכֵי	שְׁאוֹל	בֵיתָהּ	יֹרְדוֹת	אֶל־	חַדְרֵי־	מָוֶת׃	פ
राहें	अधोलोक-की	घर-उसका	उतरनेवाली	-की-ओर	कमरों-	मृत्यु-की	—
H1870	H7585		H3381	H0413	H2315	H4194	

उस का घर वह राजमार्ग है जो कब्र को जाता है और नीचे मृत्यु की काल—कोठरी में उतरता है!